بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA
Mob.9682536974,E-Mail :ansarullah@qadian.in KhulasaKhutba-08.04.2022 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

रमज़ानल मबारक को मनासबत स कबलियत दआ को शरायत आर फलसफ क बार म हज़रत मसोह माऊद अलहिस्सलाम क ज्ञान वधक उपदशा का बयान।

सारांश ख़ुत्बः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 08 अप्रैल 2022, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद, टिलफ़ोर्ड यू.के.

اَشۡھَدُ اَنۡ لَّا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحۡدَہٗ لَا شَرِیۡکَ لَہٗ وَاَشۡھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبۡدُہٗ وَرَسُوۡلُہٗ

اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सूरः बक़रः की आयत 187- وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ ۖ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ ۖ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ की तिलावत फ़रमाई तथा पवित्र आयत का अनुवाद पेश फ़रमाया-

और जब मेरे बन्दे तुझसे मेरे विषय में सवाल करें तो निश्चय ही मैं निकट हूँ। मैं दुआ करने वाले की दुआ का जवाब देता हूँ जब वह मुझे पुकारता है। अतः चाहिए कि वह भो मेरी बात पर लब्बैक कहे और मुझ पर ईमान लाएँ ताकि वे हिदायत पाएँ।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला की कृपा से रमज़ान के महीने से हम गुज़र रहे हैं। यह महीना दुआओं की क़बूलियत का महीना है। अल्लाह तआला ने इस महीने में विशेष अनुकम्पा का स्रोत जारी फ़रमा दिया है। इस महीने में इंसान अपना प्रत्येक कर्म ख़ुदा तआला की प्रसन्नता प्राप्ति के लिए करता है। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि इस महीने में जन्नत के द्वार खोल दिए जाते हैं तथा नरक के द्वार बन्द कर दिए जाते हैं, शैतान को जकड़ दिया जाता है। सामान्य अवस्था में तो शैतान को खुली छूट होती है किन्तु रमज़ान के महीने में उसे बाँध दिया जाता है तथा

ख़ुदा तआला अपने लिए रोज़ा रखने वालों को सम्पूर्ण रूप से अपनी सुरक्षा के घेरे में ले लेता है। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि रोज़दार का प्रतिफल मैं स्वयं हो जाता हूँ, यह कितनी बड़ी शुभ सूचना है।

यह आयत जो मैंने तिलावत की है यह रमज़ान की अनिवार्यता, महत्त्व, आदेश तथा रोज़ों के महत्त्व के बारे में बयान की जाने वाली आयतों के बीच में आने वाली आयत है जिसमें ख़ुदा तआला ने दुआ की क़बूलियत के तरीक़ों के विषय में बयान फ़रमाया है, उन लोगों के बारे में बयान फ़रमाया है कि जो इबादुर्रहमान हैं अथवा इबादुर्रहमान बनना चाहते हैं। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि घबराओ नहीं मैं तुम्हारे निकट ही हूँ, मेरे समस्त गुणों पर सम्पूर्ण विश्वास तथा ईमान रखो फिर देखो कि किस तरह दुआ की स्वीकृति के दृश्य तुम देखते हा।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि अल्लाह जल्ला शानुह ने जो द्वार अपने प्रणियों की भलाई के लिए खोला है वह एक ही है, अर्थात दुआ। जब कोई व्यक्ति शोकपूर्ण भावना से इस द्वार म दाख़िल होता है तो वह मौलाए करीम उसको पवित्रता एवं शुद्धता की चादर पहना देता है।

दुआ की क़बूलियत के लिए कैसी दशा पैदा करने की आवश्यकता है? इस बारे में आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि जो व्यक्ति अपने कर्मों के माध्यम से काम नहीं लेता, वह दुआ नहीं करता बल्कि ख़ुदा तआला की परीक्षा लेता है इस लिए दुआ करने से पहले अपनो समस्त शक्तियों को उपयोग में लाना आवश्यक है।

इस विषय को भी ख़ुदा तआला ने क़ुर्आन करीम में बयान फ़रमाया है जहाँ वह फ़रमाता है कि- وَالَّذِينَ جَاهَدُوا فِينَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا अर्थात जो लोग हमसे मिलने की कोशिश करते हैं, हम अवश्य ही उनको अपने रास्ते दिखाते हैं। अतः रमज़ान का महीना विशेष रूप से इस संघर्ष का महीना है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि भला यह क्यूँकर हो सके कि जो व्यक्ति अत्यंत निश्चिंत होकर सुस्ती कर रहा है वह ऐसा ही ख़ुदा की कृपा से लाभान्वित हो जाए जैसे वह व्यक्ति कि जो पूरी बुद्धि, पूरे ज़ोर तथा पूरी श्रद्धा से उसको ढूंडता है। अतः दुआओं की क़बूलियत के लिए भी पहले अपनी अवस्थाओं को बदल कर ख़ुदा तआला की ओर क़दम बढ़ाना आवश्यक है। आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि जब बन्दा मेरी ओर एक क़दम चल कर आता है तो मैं दौड़ कर उसकी ओर आता हूँ। अतः ख़ुदा तआला तो हम पर इतनी कृपा लुटाता है परन्तु निष्ठा एवं श्रद्धा अनिवार्य है, यह नहीं कि रमज़ान में तो दावा करें कि हम नमाज़े पढ़ेंगे, ख़ुदा तआला के आदेशों तथा बन्दों के अधिकारों को पूरा करेंगे परन्तु रमज़ान गुज़र जाने के बाद फिर ख़ुदा तआला तथा उसके आदेशों को भूल जाएँ, संसारिकता हम पर ग़ालिब हो जाए तो फिर ख़ुदा तआला से यह शिकायत नहीं होनी चाहिए कि ख़ुदा तआला तो यह कहता है कि मैं पुकारने वाले की पुकार सुनता हूँ लेकिन मेरी दुआएँ तो नहीं सुनी गईं। अल्लाह तआला तो हर समय अपने बन्दे को प्यार की गोद में ले लने की कोशिश करता है, उसे तो अपने बन्दे के अपनी ओर आने की उससे अधिक ख़ुशी होती है जितनी एक माँ को अपने गुम हुए बच्चे के मिलने से होती है अथवा जिस प्रकार एक यात्री को रेगिस्तान में अपने सामान से लदे गुम हुए ऊँट के मिलने स होती है।

अतः हमें प्रयास करना चाहिए कि हम उस कृपा में भागीदार होने वाले बनें तथा अल्लाह तआला की प्रसन्नता पाने वाले जिहाद को कभी कम न होने दें। यह ऐसा विषय है जिसे बार बार सुन कर समझने की आवश्यकता है अतः इस विषय के बार में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ कथन पेश करता हूँ।

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि जिस प्रकार हमारे संसारिक जीवन में हर एक कर्म के लिए एक अनिवार्य परिणाम है ऐसी ही दीन के सम्बंध में भी यही नियम है। ख़ुदा तआला इन दो उदाहरणों में स्पष्ट रूप में फ़रमाता है कि जिन लोगों ने ये काम किए कि उन्होंने ख़ुदा तआला की खोज में सम्पूर्ण प्रयत्न किए तो इस काम के लिए अनिवार्य रूप से हमारा यह जवाब होगा कि हम उनको अपनी राह दिखा देंगे तथा जिन लोगों ने अवहेलना की तथा सीधे मार्ग पर चलना न चाहा तो हमारी प्रतिक्रिया उसके बारे में यह होगी कि हम उनके दिलों को टेढ़ा कर देंगे।

फ़रमाया- इंसान के दिल पर कई प्रकार की अवस्थाएँ आती रहती हैं, अंततः ख़ुदा तआला दिव्य आत्माओं की दुर्बलता को दूर करता है तथा पवित्रता एवं नेकी की शक्ति पुरस्कार के रूप में प्रदान करता है। एक अन्य स्थान पर फ़रमाया कि जो हमारे मार्ग में संघर्ष करेगा, हम उसको अपनी राहें दिखला देंगे, यह तो वादा है। उधर यह दुआ भी सिखा दी कि اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ सो इंसान को चाहिए कि इसको सम्मुख रख कर नमाज़ में गिडगिडा कर दुआ करे और इच्छा रखे कि वह भी उन लोगों में से हो जाए जो उच्च स्तर एवं विवेक प्राप्त कर चुके हैं।

क़ादियान की एक घटना किसी ने बयान की हुई है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के एक सहाबी मस्जिद मुबारक के कोने में खड़े नमाज़ में अति भय क साथ हाथ बाँध कर दुआ किए जा रहे थे, जब ध्यान देकर सुना तो बार बार اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ का वाक्य दोहरा रहे थे।

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि जितने भी कारोबार दुनिया के हैं सबमें पहले इंसान को कुछ करना पड़ता है। जब वह हाथ पाँव हिलाता है तो फिर अल्लाह तआला भी बरकत डाल देता है। इसी भांति ख़ुदा तआला की राह में भी वही लोग उच्च स्तर पाते हैं जो संघर्ष करते हैं ..... फ़रमाया- अल्लाह तआला को पाने के लिए परिश्रम की आवश्यकता है, जिस प्रकार वह दाना धरती में दबाए बिना तथा बिना सिंचाई के बरकत नहीं पा सकता बल्कि वह स्वयं भी नष्ट हो जाता है इसी प्रकार तुम भी इस संकल्प को प्रति-दिन याद न करोगे तथा दुआएँ न मांगोगे कि ख़ुदाया हमारी सहायता कर तो फ़ज़्ले इलाही नहीं बरसेगा।

फ़रमाया कि وَالَّذِينَ جَاهَدُوا فِينَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا में इसी की ओर संकेत है कि जो प्रयास का हक़ उसके ज़िम्मे है वह पूरा करे, यह न करे कि यदि पानी बीस हाथ नीचे खोदने से निकलता है तो वह केवल दो हाथ खोद कर साहस त्याग दे ..... लोग दुनिया की चिंता में कष्ट उठाते हैं यहाँ तक कि कुछ लोग इसी में मारे जाते हैं परन्तु अल्लाह तआला के लिए एक कांटे का भी कष्ट सहना पसन्द नहीं करते।

अल्लाह तआला फ़रमाता है कि हमारे मार्ग में संघर्ष करने वाले रास्ता पाएँगे, इसका अर्थ यह है कि इस राह में संदेश वाहक के साथ मिल कर संघर्ष करना होगा, एक दो घन्ट के बाद भाग जाना मुजाहिद का काम नहीं है।

फिर तौबा तथा इस्तिग़फ़ार की ओर ध्यान दिलाते हुए आप अलै. फ़रमाते हैं कि तौबा और इस्तिग़फ़ार ख़ुदा प्राप्ति का साधन हैं ..... सहाबियों के जीवन में देखो भला उन्होंने केवल थोड़ी सी नमाज़ों से ही वे स्तर प्राप्त कर लिए थे, नहीं! बल्कि उन्होंने ख़ुदा तआला की ख़ुशी पाने के लिए अपने प्राणों तक की चिंता नहीं की तथा भेड़ बकरियों की भांति बलि चढ़ गए तब जाकर उनको यह स्तर मिला।

याद रखो दुआ एक मौत है और जैसे मौत के समय एक प्रकार को व्याकुलता एवं घबराहट होती है, इसी प्रकार दुआ के लिए भी वैसी ही व्याकुलता तथा जोश होना आवश्यक है। यह भी याद रखो कि सबसे पहले तथा सारो दुआओं मं मालिक तथा आवश्यक दुआ यह है कि इंसान अपने आपको पाप से विमुक्त होने तथा शुद्धि पाने की दुआ करे जब यह दुआ क़बूल हो जावे तथा इंसान हर प्रकार की गंदगियों तथा प्रदूषणों से पाक एवं शुद्ध हो कर ख़ुदा तआला की दृष्टि में विशुद्ध हो जावे तो फिर दूसरी दुआएँ जो इंसान की दूसरी सांसारिक आवश्यकताओं के लिए होती हैं, वे उसको मांगनी भी नहीं पड़ती वे अपने आप क़बूल होती चली जाती हैं। अत्यंत परिश्रम से परिपूर्ण एवं मेहनत वाली यही दुआ है कि वह गुनाहों से पाक हो जावे .... दुआ भी एक संघर्ष को चाहती है, जो व्यक्ति दुआ से निश्चिंत होता है तथा उससे दूर रहता है, अल्लाह तआला भी उसकी चिंता नहीं करता तथा उससे दूर हो जाता है। उतावलापन तथा जल्दी यहाँ काम नहीं देती। अल्लाह तआला हमें इन बातों पर अमल करने का सामर्थ्य प्रदान करे तथा इस रमज़ान को हमारे लिए अल्लाह तआला से पक्का सम्बंध जोड़ने वाला बना दे।

दुनिया के हालात के लिए भी दुआ करें, अल्लाह तआला दुनिया को विनाश से बचाए और इनको बुद्धि दे कि ये अपने पैदा करने वाले को पहचानने वाले हों।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- नमाज़े जुम्अः के बाद मैं एक वैबसाईट तथा मोबाईल एपलीकेशन का संचार करूँगा जो एम. टी. ए. ने बनाई है। इसमें तीन सा तेरह बदरी सहाबियों के सम्बंध में मेरे जुम्अः के सम्बोधनों का सयाजन किया गया है। इस वैबसाईट पर पाठकगण बदरी सहाबियों के विषय में बनाई गई प्रोफ़ाईल्ज़ को पढ़ सकते हैं। हर एक सहाबी के विषय में सवाल व जवाब का एक क्विज़ उपलब्ध है इसी प्रकार लाभकारी चित्र तथा कठिन शब्दों तथा नामों का अरबी उच्चारण भी सुना जा सकता है।

अल्लाह तआला इस वैबसाईट को लोगों के लिए लाभप्रद बनाए, आमीन।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ
اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ
مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ
وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652
टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131